पशु एवं मत्स्य संसाधन विकास के लिए रोड मैप

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार, पटना

उद्देश्य

- पशुपालन गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण अर्थव्यस्था का विकास, ग्रामीण बेरोजगारी से लड़ने हेतु मौका प्रदान करता है एवं गरीब ग्रामीणों एवं शहरी उच्च समाज के बीच बढ़ती खाई को पाटने हेतु मौका प्रदान करता है।
- मानव खपत हेतु पशु जन्य प्रोटीन उपलब्धता पर, ग्रामीण लोगों के लिए पर्याप्त एवं सतत् अर्थोपार्जन एवं बेरोजगार युवाओं के लिए स्वरोजगार के मौका सृजन पशुपालन कार्यों के बहुआयामी कार्यकलापों पर निर्भर करता है।
- उपरोक्त लक्ष्यों को विभाग के योजना एवं गैर योजना कार्यक्रमों को जारी रखकर एवं नये योजनाओं को अपनाकर पूरा किया जायगा।

पशुपालन के नये आयाम

- पशु–चिकित्सा सेवा–सुविधा ः पशु–चिकिसालय से विस्तारित कर आपातकालीन अवस्था में पशुपालकों के द्वार तक ले जाना।
- पशु टीकाकरण ः पशु–चिकत्सालय / पंचायत से विस्तारित कर घर–घर टीकाकरण (लगभग 95% तक) की सुविधा प्रदान करना।
- पशु बीमा ः सम्प्रति 5 जिलों (पटना, रोहतास, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर एवं बेगुसराय) से विस्तारित कर राज्य के शेष सभी जिलों को आच्छादित करना।
- बकरी–मांस ः वर्त्तमान के प्रति व्यक्ति / वर्ष मांस की उपलब्धता को 2.58 किलोग्राम से बढ़ाकर मानक के अनुसार 10.95 किलोग्राम करना।
- भैंस विकास कार्यक्रम ः इस कार्यक्रम को चलाकर उन्नत नस्ल की भैंस तैयार करने के साथ–साथ प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता को अनुशंसित मानक पर लाना।

पशुपालन के नये आयाम

- अंडा ः प्रति व्यक्ति / वर्ष मांस की उपलब्धता को 10.30 से बढ़ाकर अनुशंसित मानक पर लाना।
- मुर्गा मांस ः मुर्गा मांस के उत्पादन को 76.53 लाख किलो/ वर्ष से बढ़ाकर 91 लाख किलो / वर्ष करना।
- अनुमंडलीय पशु–चिकित्सा सेवा ः सामान्य स्तरीय पशु–सिकत्सा सेवा को विस्तारित कर विशिष्ट पशु चिकित्सा सेवा अनुमंडलीय पशु–चिकित्सालयें के साथ–साथ आपातकालीन अवस्था में द्वार पर भी उपलब्ध कराना।
- सूचना संप्रेषण तंत्र ः कमजोर सूचना संप्रेषण तंत्र को फैक्स, कम्प्यूटर आदि से सुसज्जित कर कार्यालयो को सुदृढ़ करना।

पशु–चिकित्सा सेवा का क्रियान्वयन

- पशु–चिकित्सकों की संख्या में वृद्धि कर (2)
- पाराभेट की संख्या को बढ़ाकर (3)
- आधारभूत संरचना का विकास कर–
  - पशु चिकित्सलय भवनों की मरम्मति/पुनरुद्धार / निर्माण।
  - उपस्कर एवं औजार की आपूर्त्ति।
  - दवा एवं टीकौषधि की पर्याप्त व्यवस्था।
- पशु–चिकित्सकों को मोटरसाइकिल की सुविधा।
- पशु–चिकित्सकों को मोबाइल फोन की सुविधा।

घर–घर टीकाकरण का क्रियान्वयन

- प्रति पशु–चिकित्सालय दो पारावेट का चयन।
- निर्धारित समय पर टीकाकरण।
- टीकाकरण–कार्यों का पंचायत प्रतिनिधियों द्वारा सत्यापन।
- टीकाकरण कार्यों का प्रबोधन।

पशु बीमा का क्रियान्वयन

- दुधारु पशुओं का बीमा।
- प्रीमीयम की आधी राशि पशुपालकों के द्वारा एवं शेष आधी राशि सरकार के द्वारा वहन करना।
- पांच जिलों (पटना, समस्तीपुर, मुजफ्फरपु, बेगूसराय एवं रोहतास) से बढ़ाकर सभी जिलों में लागू करना

बकरी विकास का क्रियान्वयन

- उन्नत नस्ल के बकरी–प्रक्षेत्र की स्थापना।
- उन्नत नस्ल के बकरों का पंचायत स्तर पर वितरण।
- स्थानीय नस्लों का नस्ल सुधारकर प्रतिस्थापन।
- रख–रखाव एवं आहार व्यवस्था पर प्रशिक्षण।
- विपणन प्रणाली का विकास।

भैंस विकास कार्यक्रम का क्रियान्वयन

- कृत्रिम / प्राकृतिक गर्भाधान द्वारा नस्ल सुधार।
- मुर्रा भैंस प्रजनन प्रक्षेत्र की स्थापना।
- दूरस्थ क्षेत्रों में मुर्रा भैंसों का वितरण।
- प्रबंधन एवं पशु आहार व्यवस्था पर पशुपालकों का प्रशिक्षण।
- डेयरी सोसाइटी को दूरस्थ क्षेत्रों में विस्तारीकरण।

ग्रामीण कुक्कुट विकास का क्रियान्वयन

- पोल्ट्री मांस के उत्पादन को 76.53 लाख किलो / वर्ष से बढ़ाकर 91 लाख किलो / वर्ष करना।
- लो इनपुट वाली मुर्गियों (वनराजा, ग्राम–प्रिया एवं निर्भीक नस्लों) का पालन।
- अल्प उत्पादक नस्लों का प्रतिस्थापन।
- छः कुक्कुट प्रक्षेत्रों की स्थापना।
- कुक्कुट पालकों को प्रशिक्षण।
- बी0 पी0 एल0 परिवारों को चूजों का वितरण।
- बेहतर विपणन प्रणाली की स्थापना।

अनुमंडलीय पशु–चिकित्सालय सेवा का क्रियान्वयन

- पशु रोग विशेषज्ञों (4) का प्रावधान।
- चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों (4) का प्रावधान।
- नये भवनों का निर्माण।
- चिकित्सा सेवायुक्त वाहन की सुविधा।
- पैथोलॉजिकल जाँच की सुविधा।
- मोबाइल फोन की सुविधा।
- दवा, औजार आदि की सुविधा।

सूचना संप्रेषण तंत्र का क्रियान्वयन

- फैक्स मशीन का प्रावधान।
- कम्प्यूटर सेट का प्रावधान।
- टेलीफोन / मोबाइल फोन की सुविधा।

धन्यवाद